जौनी ऍपिलसीड

Johnny Appleseed

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

जौनी ऍपिलसीड
Johnny Appleseed

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

रेखांकन: अविनाश देशपांडे
(अलीकी के मूल चित्रों पर आधारित)

ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 2000, 2003, 2006

मूल्य: 10 रुपये
Price : 10 Rupees

Published by Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

जौनी ऍपिलसीड

Johnny Appleseed

जौनी ऍपिलसीड

अंग्रेजी में ए (A) से ऍपिल, यानि सेब होता है।
सीड का मतलब होता है बीज।
दोनों के मिलने से बनता है ऍपिलसीड– यानि सेब का बीज।
यह कहानी है जौनी ऍपिलसीड के बारे में।
बात बहुत पुरानी है, पर है एकदम सच्ची।
26 सितम्बर 1774 को अमरीका में लीयोमिंस्टर,
मैसाचुसेट्स (अमरीका) में, जौन चैपमैन का जन्म हुआ।
परंतु बाद में उसे अंकल जौनी ऍपिलसीड के नाम से जाना गया।
उसका यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि वो जहां भी जाता,
वहां पर सेब के बीज बोता।
जौन चैपमैन एक बहादुर और दयालु इंसान था।
उसे घर से बाहर ही रहना अच्छा लगता था।
वो घंटों जंगलों में पेड़ों और फूलों के बीच, घूमा करता था।
इसमें उसे अपार खुशी मिलती थी।

Johnny Appleseed

This story is about Johnny Appleseed.
It is an old story. But it is true.
John Chapman was born on 26 September in Leominster,
Massachusetts, USA.
He was later nicknamed Johnny Appleseed.
He was given this name because
wherever he went he planted appleseeds.
John Chapman was a brave and kind man.
He liked being outdoors.
He walked in the forest for hours.
He loved being near wild flowers.

एक दिन,
बहुत देर तक घूमने फिरने के बाद
जौनी सुस्ताने के लिए एक पेड़ के नीचे बैठ गया।
सूरज की गर्म धूप
उसकी पीठ को सेंक रही थी
और हरी घास उसके तलुवों को सहला रही थी।
जौनी ने अपनी थैली में से एक सेब निकाला
और उसे खाया।
सेब खत्म होने के बाद वो अपनी हथेली पर पड़े
सेब के भूरे बीजों को घूरने लगा।
जौनी सोचने लगा –
अगर सेब के बीजों को इकट्ठा करके
उन्हें ज़मीन में बोया जाए तो जल्दी ही सारा देश
सेब के पेड़ों से हरा–भरा हो जाएगा।

One day after a long nature ramble
he rested under a tree.
The hot sun warmed his feet
and the green grass tickled his toes.
He took out an apple from his bag.
After eating the apple he gaped
at the brown apple seeds lying on his palm.
He thought that if could collect
enough of those seeds and plant them
all over then the whole country would become
green with apple trees.

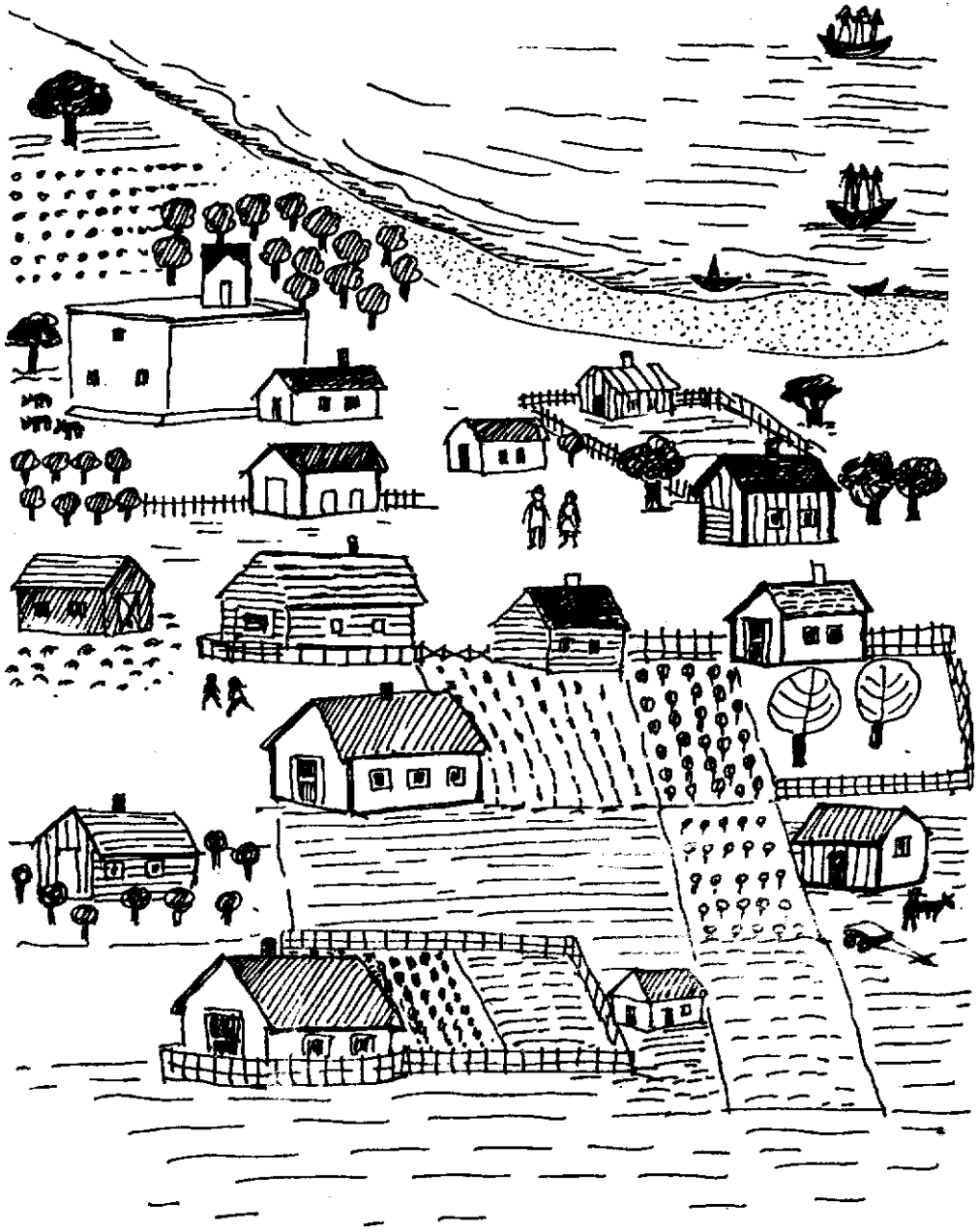

जौन चैपमैन अमरीका के
पूर्वी भाग में रहता था।
वहां पर काफी लोग पहले से ही बस गए थे।
परंतु बहुत से पायोनियर (अगुआ लोग)
अभी भी बसने के लिए पश्चिम की ओर
पलायन कर रहे थे।
पश्चिम में न तो कहीं घर थे
और न ही कोई [illegible]
वहां पर सड़क तक न [illegible]
[illegible]
रेड–इंडियन आदिवासियों का [illegible]

John Chapman lived
in the eastern part of America.
Many people had already settled there.
But many pioneers were still
migrating towards the west.
In the west there were
neither houses nor villages.
There were no proper roads
- only dirt tracks
used by the native Indians.

पायोनियर अपनी बंद घोड़ागाड़ियों में
सामान लादकर बीहड़ जंगलों में से होते हुए
लंबी और खतरनाक यात्राएं तय करते।

The pioneers used to
travel with their belongings
in closed horse-carriages.
They trudged through dense forests.
The journey was long and dangerous.

वे अपने देश के नए हिस्से में
एक नई ज़िंदगी की शुरुआत करना चाहते थे।
जौन चैपमैन ने भी पायोनियरों के साथ यात्रा शुरू की।
परंतु वो बंद घोड़ागाड़ी में नहीं गया।
उसने पैदल चलकर ही यात्रा करने की ठानी।
उसने अपने साथ कोई हथियार भी नहीं लिया।
वैसे उन दिनों लोग हथियार लेकर ही चलते थे।
हथियारों से वो खतरों से बचते और
जंगली जानवरों से अपनी सुरक्षा करते।
परंतु जौन चैपमैन की पीठ पर
केवल एक बोरी लदी थी
जो कि सेब के बीजों से भरी थी।
उसके सिर पर टोपी की जगह
एक लंबे हैंडिल वाला बर्तन था।

These people wanted to begin a new life
in a different part of their country.
John Chapman also travelled with the pioneers.
But he did not go in a horse-carriage.
He travelled on foot.
He did not carry any weapon with him.
In those days people had to carry weapons to
protect themselves from wild animals and enemies.
But John Chapman only carried a bag on his back.
His bag was full of apple seeds.
Instead of a hat he wore a frying pan
with a handle on his head.

जौनी चलते–चलते पूरी यात्रा के दौरान
सभी जगह सेब के बीज बोता जाता।
उसे जो कोई भी रास्ते में मिलता
वो उसे सेब के बीजों की छोटी–छोटी थैलिएं देता।
धीरे–धीरे सभी लोग जौन चैपमैन को
अंकल जौनी ऍपिलसीड के नाम से बुलाने लगे।

Johnny planted apple seeds wherever he went.
He gave little bags of apple seeds to everyone he met.
Slowly, everyone started calling him Johnny Appleseed.

कभी–कभी यात्रा के बीच में जौनी एक ही स्थान पर
कई हफ्तों तक ठहर कर पायोनियरों की मदद करता।
पहले सभी लोग मिलकर ज़मीन साफ करते। फिर लकड़ी के
लट्ठों से घर बनाते। और फिर सैकड़ों सेब के पेड़ लगाते।

During his journey Johnny would often spend
a few weeks helping the pioneers.
First everyone would clear the land.
Then they would make log houses. In the end
they would plant hundreds of apple trees.

जब सारा काम खत्म हो जाता
तब जौनी अपनी आगे की यात्रा शुरू करता
और दूसरे लोगों की सहायता में लग जाता।
परंतु वो अपने पुराने मित्रों से मिलने
के लिए बार–बार वापिस आता।
सभी लोग जौनी ऍपिलसीड से प्यार करते।
खासकर बच्चे।
जब जौनी सेब के बीज बोते–बोते थक जाता
और सुस्ताने के लिए बैठता तो बच्चे
उसे घेरकर बैठ जाते और उससे कहानियां
और अपने अनुभव सुनाने को कहते।

After finishing the work
Johnny would move on to help others.
But he always returned to meet his old friends.
Everyone loved Johnny Appleseed.
Especially children.
When Johnny got tired of planting apple seeds
he would sit down to rest under some tree.
Then the children would surround him
and Johnny would tell them stories
and his own interesting experiences.

जौनी ऍपिलसीड
अकेले ही पैदल यात्रा करता।
वो जंगल के अंदर या नदी के किनारे
खुले आसमान के नीचे ही सोता।
राह में उसे भेड़िए, लोमड़ियां, चिड़िएं
और हिरन मिलते।
वे सभी उसके दोस्त बन जाते।

Johnny Appleseed
always travelled alone on foot.
He slept on the forest floor
or near a stream under the open sky.
On his way he met wolves,
jackals, deer and different birds.
He had a way of making friends
with the animals.

एक दिन दोपहर के समय
जौनी खाना खा रहा था।
तभी एक ज़ोर की आवाज़ आई और तीन भालू के बच्चे
एक पेड़ के पीछे से दौड़ते हुए बाहर निकले।
कुछ देर बाद
उन भालू के बच्चों की मां भी बाहर आई।
जब उसने अपने बच्चों को जौनी के साथ खेलते हुए देखा
तो वो काफी देर तक उन्हें टकटकी लगाए देखती रही।
तब जाकर उसे पक्का विश्वास हुआ
कि जौनी ऍपिलसीड उसके बच्चों को
किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाएगा।

One day Johnny was eating
his afternoon lunch in the forest.
Suddenly there was a loud roar
and three bear cubs
ran out from the thicket.
After a while the mother bear also came out.
When she saw her cubs
happily playing with Johnny Appleseed
she was assured that
Johnny meant no harm.
Only then did she go away.

घुमक्कड़ी के दौरान जौनी को बहुत से
रेड–इंडियन आदिवासी मिलते।
जौनी उनके साथ
अच्छी तरह पेश आता।
जौनी उन्हें बीज और जड़ी–बूटियां देता
जिनका वो दवाई जैसे इस्तेमाल करते।
स्थानीय आदिवासी
गोरे लोगों से घोर नफरत करते थे।
गोरों ने आदिवासियों की ज़मीन हड़प ली थी।
परंतु रेड–इंडियन जौनी को
अपना प्रिय दोस्त मानते थे।

During his travels Johnny
met a lot of native Indians.
Johnny treated them with respect.
Johnny gave them seeds to plant
and herbs to use as medicines.
The local natives hated the white men.
The white men had snatched the land
from the natives.
But the native Indians
always considered
Johnny as their true friend.

लोगों का आपस में लड़ना–झगड़ना
जौनी को एकदम नापसंद था।
वो नए बसने वालों और
इंडियन आदिवासियों के बीच
शांति कायम करने की कोशिश करता।
उसका पक्का विश्वास था कि सभी लोगों को
आपस में मिलजुल कर
भाईयों की तरह रहना चाहिए।

Johnny did not like
people fighting
amongst themselves.
He tried to establish peace
between the new settlers
and the native Indians.
He believed that all human beings
should live together like brothers.

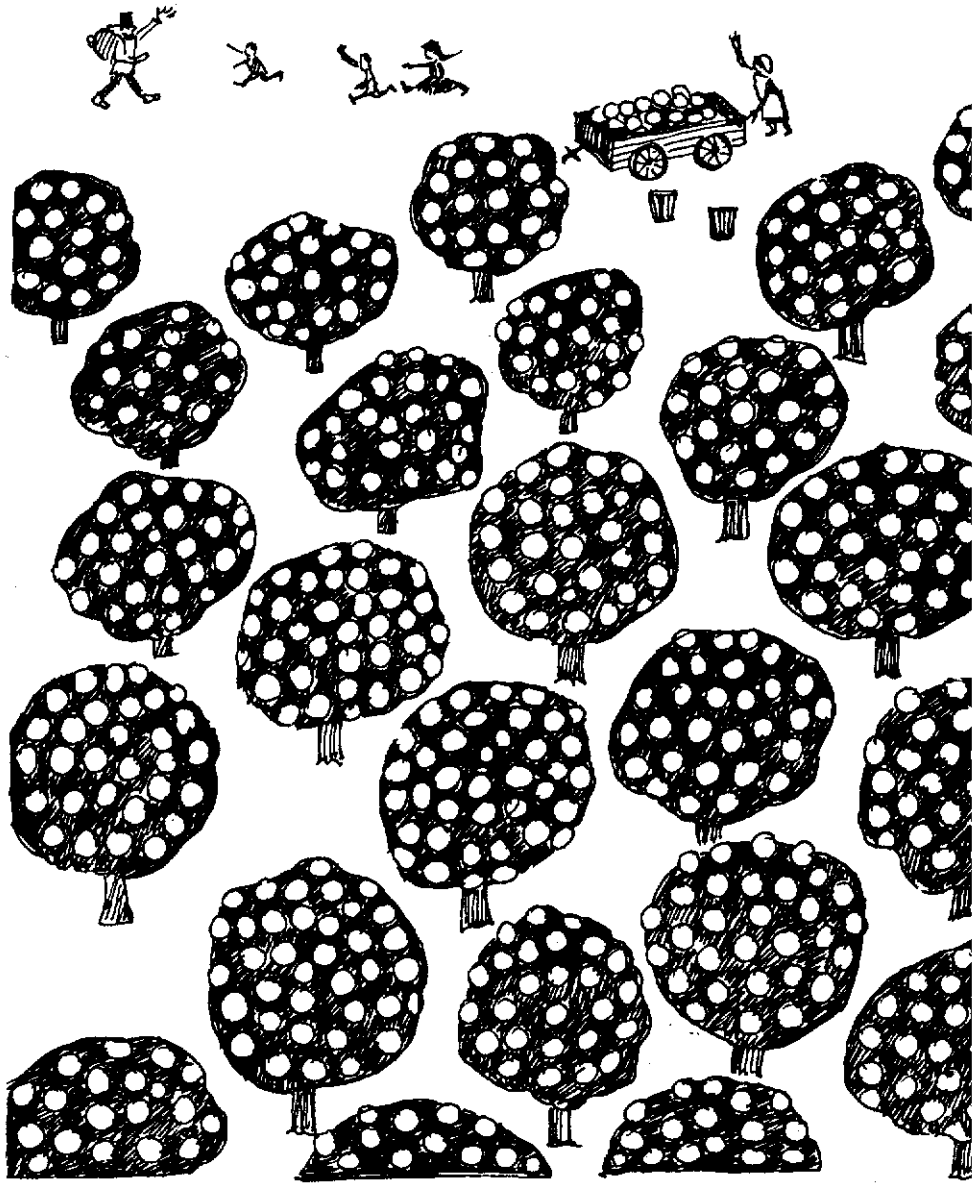

जौनी का पैदल सफर ज़ारी रहता
और वो जहां भी जाता वहां पर सेब के बीज बोता।
जब उसके पास बीज खत्म हो जाते
और जब उसे बीजों की ज़रूरत होती
तो वो सेब का रस निकालने वाले कारखानों से
बोरे भर–भरकर सेब के बीज ले आता।
धीरे–धीरे तमाम लोग जौनी के लिए
सेबों के बीज इकट्ठे करने लगे।
इस तरह कई साल बीत गए।
जौनी ऍपिलसीड की यात्रा ज़ारी रही।
वो जब अपने पुराने दोस्तों के घर जाता
और वहां सेबों से लदे पेड़ों को देखता
तो उसे अपार आनंद मिलता
और वो खुशी से झूम उठता।

Johnny continued travelling on foot.
And wherever he went he planted apple seeds.
When the seeds finished
he went to the factories
producing cider - a kind of apple drink.
He collected bags full of apple seeds
from the factories.
Slowly many people
started collecting apple seeds for Johnny.
Many years passed.
Johnny travelled far and wide.
Sometimes when he visited his friends
he saw big trees laden with apples.
These were the trees he had helped plant.
This made him very happy.

फिर एक साल ऐसा आया
जब जाड़े के मौसम में
बेहद कड़ाके की ठंड पड़ी।
वसंत आने के बाद भी
सारी ज़मीन बर्फ की परत से ढंकी रही।
पेड़ों की टहनियों पर
एक भी नया पत्ता नहीं निकला।
फिक्र के मारे जौनी न तो
खाना खा सका और न ही सो सका।
उसे डर था
कि कहीं उसके
सेब के पेड़ मर न जाएं।

There was a severe winter one year.
Even during spring
the ground was covered with snow.
Not a single new leaf
sprouted from the tree branches.
This made Johnny very sad.
He was not able to eat or sleep.
He was afraid
that the apple trees might die.

एक दिन
वो सेबों के बगीचे में
पेड़ों के नीचे से गुज़र रहा था।
अचानक
जौनी ऍपिलसीड ज़मीन पर गिर पड़ा।
वो काफी बीमार हालत में था।
कुछ घंटों के बाद एक आदिवासी औरत
और उसका लड़का वहां से गुज़रे।
उन्होंने जौनी को
ठंडी बर्फ में पड़े देखा।
लड़का सहायता के लिए
लपक के दौड़ा।
जौनी को पास के आदिवासी गांव में
ले जाया गया।

Then one day when
Johnny was walking through
an apple orchard
he fell down on the ground.
He was very ill.
After a few hours
a native Indian woman and her son
passed through that way.
They saw Johnny lying in the snow.
The boy ran to help Johnny.
Johnny was taken
to a near by native settlement.

कई दिनों तक
जौनी को तेज़ बुखार रहा।
रेड–इंडियन आदिवासियों ने
उसे दवाई दी
और उसकी मन लगाकर
सेवा की।

Johnny ran high fever
for a few days.
The native Indians
gave him medicines
and took good care of his health.

चंद दिनों बाद
जौनी ऍपिलसीड ने अपनी आंखें खोलीं।
वो अपने इंडियन आदिवासी
मित्रों को देखकर मुस्कराया।
उसे मालूम था कि
उन्होंने ही उसकी जान बचाई थी।
उसे सूरज की तेज़ गर्मी भी महसूस हुई।
गर्मी से पेड़ों की बर्फ पिघल गई थी।
आखिरकार, वसंत आ ही गया था!
तब तक जौनी की
तबियत भी सुधर चुकी थी।
वो कभी भी अपने मित्रों को नहीं भूला
वो बार–बार उनसे मिलने
के लिए वापिस आता।

After a few days
Johnny Appleseed opened his eyes.
He smiled at his native Indian friends.
He knew that they had saved his life.
Then he felt the warmth of the sun.
The snow had started to melt.
At last, spring had arrived.
Johnny's health had improved.
He never forgot his old friends.
He visited them again and again.

जौनी ऍपिलसीड
एक संवेदनशील पायोनियर था।
वो बहुत सालों तक जिया।
और वो जहां भी गया
उसने सभी जगहों पर सेब के पेड़ लगाए।
उनमें से कई पेड़ आज भी खड़े हैं।
हम उन्हें आज भी देख सकते हैं।
उनके तने की छाल पर झुर्रियां पड़ गई हैं
परंतु वे फिर भी सेबों से लदे हैं।
पेड़ लगाने और फल उगाने का,
अनमोल सबक
जौनी ऍपिलसीड ने
दुनिया के सारे इंसानों
को सिखाया।

Johnny Appleseed was a sensitive pioneer.
He lived until he was very old.
And wherever he went
he planted apple seeds.
Many of the trees he planted
can still be seen today.
The bark of these old trees have deep furrows
but they still bear a lot of apples every year.
Johnny Appleseed
helped the early pioneers
to plant lots and lots of apple trees.
He helped to green the American countryside.